तुलसीदास

जीवन-परिचय :—

तुलसीदास जी के जन्म स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। मूल गोसाईं चरित एवं तुलसी-चरित में इनका जन्मस्थान राजापुर बताया गया है। अन्य कुछ विद्वान 'सोरों' नामक स्थान पर जन्में बताते हैं। आचार्य शुक्ल के अनुसार भी इनका जन्म राजापुर में ही माना जाता हैं। जन्म, संवत 1554 वि० में बताया जाता हैं, और यही सर्वाधिक प्रचलित है।

पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। जन्म के सम्बन्ध में एक दोहा प्रचलित हैं—

"पन्द्रह सौ चौवन विसे, कालिन्दी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्यो शरीर॥"

बचपन का नाम रामबोला था। जन्मे तो दाँत भी थे और मुँह से राम निकला था। राक्षस समझकर इनके पिता ने त्याग दिया तो एक दासी ने इनको पाला। बाबा नरहरिदास ने शिष्य बनाया। इनका विवाह रत्नावली से हुआ था परन्तु उससे विरक्त हो गए। काशी में शेष सनातन से शिक्षा में वेद-वेदांग पढ़े। फिर राम के चरित्र का गायन करने लगे और रामचरितमानस की

Scanned by TapScanner

रचना की। इनका समय काशी, अयोध्या और चित्रकूट में बीता। मृत्यु के सम्बन्ध में भी एक दोहा प्रसिद्ध है—

"सम्वत सोलह सौ असी
असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला तीज सनि
तुलसी तज्यो शरीर॥"

कृतियाँ :—

इनकी 12 प्रामाणिक रचनाएँ मानी जाती हैं—

1. पार्वती मंगल
2. जानकी मंगल
3. वैराग्य संदीपनी
4. बरवै रामायण
5. रामाज्ञा प्रश्न
6. कवितावली
7. कृष्ण गीतावली
8. गीतावली
9. रामचरितमानस
10. दोहावली
11. विनय पत्रिका
12. रामलला नहछू

Scanned by TapScanner